दो वर्षीय
डिप्लोमा इन एलिमेण्ट्री एजुकेशन
(डी.एल.एड.)
फेस–टू–फेस
पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम

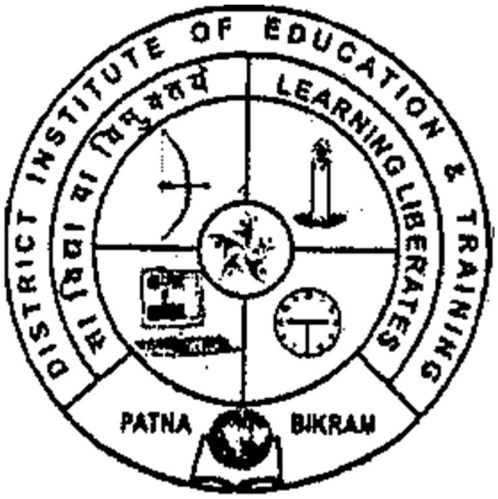

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पटना, बिक्रम

विषय सूची

	प्रथम वर्ष	
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	
F-2	बचपन और बाल विकास	
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	
F-9	Proficiency in English	
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	
F-11	कला समेकित शिक्षा	
F-!2	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 (4 सप्ताह)	

	द्वितीय वर्ष	
S-1	समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा	
S-2	संज्ञान, सीखना और बाल विकास	
S-3	कार्य और शिक्षा	
S-4	स्वयं की समझ	
S-5	विद्यालय मे ं स्वास्थ्य, यागे एवं शारीरिक शिक्षा	
S-6	Pedagogy of English (Primary Level)	
S-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)	
S-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)	
S-9	उच्च–प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–8) के लिए इनमें से किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्र :–A. गणित B.विज्ञान C.सामाजिक विज्ञान D. English E.हिन्दी F.संस्कृत G.मैथिली H.बांगला I.उर्दू	
SEP-2	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2 (इंटर्नशिप) 16 सप्ताह	

शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण क्यों आवश्यक है ?

शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण इसलिए आवश्यक है कि वेः

- बच्चों का ख्याल कर सकें और उनके साथ रहना पसंद करे।
- सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।
- ग्रहणशील और निरंतर सीखने वाले हों।
- शिक्षा को अपने व्यक्तिगत अनुभवों की सार्थकता की खाजे के रूप में देखें तथा ज्ञान निर्माण को मननशील अधिगम की लगातार उभरती प्रक्रिया के रूप में स्वीकार करें।
- ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों के बाह्य ज्ञान के रूप में न देखकर साझा संदर्भों और व्यक्तिगत संदर्भों में उसके निर्माण को देखें।
- समाज के प्रति अपना दायित्व समझे ं और बेहतर विश्व के लिए काम करे।
- उत्पादक कार्य के महत्त्व को समझें तथा कक्षा के बाहर और अंदर व्यावहारिक अनुभव देने के लिए कार्य को शिक्षण का माध्यम बनाएँ।
- पाठ्यचर्या की रूपरेखा, उसके नीतिगत–निहितार्थ एवं पाठो ं का विश्लेषण करे।

(राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005)

पाठ्यचर्या की रूपरेखा

दो वर्षीय डी.एल.एड.(फेस–टू–फेस) पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की रूपरेखा

	प्रथम वर्ष	Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	4	70	30	100
F-2	बचपन और बाल विकास	4	70	30	100
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	4	70	30	100
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	4	70	30	100
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	2	35	15	50
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	2	35	15	50
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-9	Proficiency in English	2	35	15	50
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	2	35	15	50
F-11	कला समेकित शिक्षा	4	40	60	100
F-!2	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	4	40	60	100
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 (4 सप्ताह)	4	–	100	100
	कुल	40	570	430	1000

	द्वितीय वर्ष	Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक
S-1	समकालीन भारतीय समाज में शिक्षा	4	70	30	100
S-2	संज्ञान, सीखना और बाल विकास	4	70	30	100
S-3	कार्य और शिक्षा	2	–	50	50
S-4	स्वयं की समझ	2	35	15	50
S-5	विद्यालय मे ं स्वास्थ्य, यागे एवं शारीरिक शिक्षा	4	40	60	100
S-6	Pedagogy of English (Primary Level)	2	35	15	50
S-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
S-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–2 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
S-9	उच्च–प्राथमिक स्तर (कक्षा 6–8) के लिए इनमें से किसी एक विषय का शिक्षणशास्त्र :–A. गणित B.विज्ञान C.सामाजिक विज्ञान D. English E.हिन्दी F.संस्कृत G.मैथिली H.बांगला I.उर्दू	2	35	15	50
SEP-2	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–2 (इंटर्नशिप) 16 सप्ताह	16	100	300	400
	कुल	40	455	545	1000
	समग्र कुल	80	1025	975	2000

1 Credit = 30 Hours of Study (for Face-to-Face mode)

प्रथम वर्ष
(First Year)

प्रथम वर्ष पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की रूपरेखा

	प्रथम वर्ष	Credit	बाह्य	आन्तरिक	कुल अंक
F-1	समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ	4	70	30	100
F-2	बचपन और बाल विकास	4	70	30	100
F-3	प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा	4	70	30	100
F-4	विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास	4	70	30	100
F-5	भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास	2	35	15	50
F-6	शिक्षा में जेण्डर एवं समावेशी परिप्रेक्ष्य	2	35	15	50
F-7	गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-8	हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)	2	35	15	50
F-9	Proficiency in English	2	35	15	50
F-10	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र	2	35	15	50
F-11	कला समेकित शिक्षा	4	40	60	100
F-12	शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी	4	40	60	100
SEP-1	विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1 (4 सप्ताह)	4	–	100	100
	कुल	40	570	430	1000

F-1 :–समाज, शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ

पूर्णांक : 100 (70+30) अध्ययन अवधि : 80 घंटा

उद्देश्य :

- बच्चे और बचपन से सम्बंधित विभिन्न परिप्रेक्ष्यों की समझ को विकसित करना।
- बचपन को आकार देनेवाले ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक कारको ं की भूमिकाओं को समझना।
- विद्यालय की भूमिका को समाजीकरण के संदर्भ में विश्लेषित करने की समझ बनाना।
- शिक्षा और ज्ञान के अवधारणा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना।
- भारतीय चिंतकों की शैक्षिक रचनाओं के आधार पर उनकी शैक्षिक विचारों से अवगत होना तथा समकालीन परिदृश्य में उन विचारों की सार्थकता की समीक्षा करना।
- पाठ्यचर्या की समझ और स्थानीय पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व की समझ बनाना।

इकाई–1 : बच्चे, बचपन और समाज

- बच्चे तथा बचपन : सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक समझ
- समाजीकरण की समझ : अवधारणा, कारक तथा विविध संदर्भ
- बच्चो ं का समाजीकरण : माता–पिता, परिवार, पड़ोस, जेण्डर एवं समुदाय की भूमिका
- बाल अधिकारों का संदर्भ : उपेक्षित वर्गों से आनेवाले बच्चों पर विशेष चर्चा के साथ

इकाई–2 : विद्यालय और समाजीकरण

- शिक्षा, विद्यालय और समाज : अंतर्सम्बंधों की समझ
- विद्यालय में समाजीकरण की प्रक्रिया : विभिन्न कारकों की भूमिका व प्रभावों की समझ
- शिक्षा, शिक्षण तथा विद्यालय : सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक आधार

इकाई–3 : शिक्षा और ज्ञान : विविध परिप्रेक्ष्यों की समझ

- शिक्षा : सामान्य अवधारणा, उद्देश्य एवं विद्यालयी शिक्षा की प्रकृति
- शिक्षा को समझने के विभिन्न आधार/दृष्टिकोण : दर्शनशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, शिक्षा का साहित्य, शिक्षा का इतिहास, आदि
- ज्ञान की अवधारणा : दार्शनिक परिप्रेक्ष्य
- ज्ञान के विविध स्वरूप एवं अर्जन के तरीके

इकाई–4 : प्रमुख चिंतको ं के मौलिक लेखन की शिक्षाशास्त्रीय समझ

- महात्मा गाँधी–हिन्द स्वराज : सामाजिक दर्शन और शिक्षा के संबंध को रेखांकित करते हुए
- गिजुभाई बधेका–दिवास्वप्न : शिक्षा में प्रयोग के विचार को रेखांकित करते हुए
- रवीन्द्रनाथ टैगोर–शिक्षा : सीखने में स्वतंत्रता एवं स्वायत्तता की भूमिका को रेखांकित करते हुए
- मारिया मांटेसरी–ग्रहणशील मन पुस्तक से 'विकास के क्रम' शीर्षक अध्याय : बच्चों के सीखने के सम्बंध में विशेष पद्धति को रेखांकित करते हुए
- ज्योतिबा फुले–हंटर आयोग (1882) को दिया गया बयान : शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक असमानता को रेखांकित करते हुए
- डॉ. जाकिर हुसैन–शैक्षिक लेख : बालकेन्द्रित शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए
- जे.कृष्णमूर्ति–'शिक्षा क्या है' : सीखने–सिखाने में संवाद की भूमिका को रेखांकित करते हुए
- जॉन डीवी–शिक्षा आरै लाके तंत्र से 'जीवन की आवश्यकता के रूप मे ं शिक्षा' शीर्षक लेख : शिक्षा और समाज की अंतक्रिया को रेखांकित करते हुए ं

इकाई–5 : पाठ्यचर्या की समझ : बच्चों तथा समाज के संदर्भ में

- पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम : अवधारणा तथा विविध आधार
- बच्चो ं की पाठ्यपुस्तके ं : शिक्षा, ज्ञान एवं समाजीकरण के माध्यम के तारै पर
- स्थानीय पाठ्यचर्या की समझ

F-2 बचपन और बाल विकास

पूर्णांक : 100 (70+30) अध्ययन अवधि : 80 घंटा

उद्देश्य :

- बचपन के बारे में मनो–सामाजिक अवधारणाओं की समझ को विकसित करना।
- बाल विकास की अवधारणा तथा इसका सीखने से अंतर्सम्बधों का विश्लेषण करना।
- बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत हानेा।
- सीखने में सृजनात्मकता की भूमिका को समझना।
- बच्चों के सीखने–सिखाने में खेल की भूमिका का विश्लेषण करना।
- बच्चों के व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना।
- संवेगात्मक एवं नैतिक विकास की अवधारणा को समझना।

इकाई–1 : बचपन व बाल विकास की समझ

- बच्चे तथा बचपन : मनो–सामाजिक अवधारणा
- बचपन को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारक
- बाल विकास : अवधारणा, विकास के विविध आयाम, प्रभावित करनेवाले कारक
- वृद्धि एवं विकास : अंतर्सम्बंधों की समझ, अध्ययन के तरीके

इकाई–2 : बच्चों का शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास

- शारीरिक विकास की समझ
- मनोगत्यात्मक विकास की समझ
- बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास की समझ

इकाई–3 : बच्चों में सृजनात्मकता

- सृजनात्मकता : अवधारणा, बच्चों के संदर्भ में विशेष महत्त्व
- बच्चों में सृजनात्मक विकास हेतु विविध तरीकें
- सृजनात्मकता : प्रभावित करने वाले कारक

इकाई–4 : खेल और बाल विकास

- खेल से आशय : अवधारणा, विशेषता, बच्चों के विकास के संदर्भ में महत्त्व
- बच्चों के खेल : विविध प्रकार एवं संदर्भ
- बच्चों के विविध खेल : सीखने–सिखाने के माध्यम के रूप में

इकाई–5 : बच्चे और व्यक्तित्व विकास

- व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम : एरिक्सन के सिद्धांत का विशेष संदर्भ
- बच्चों में भावनात्मक/संवेगात्मक विकास का पहलू : जॉन बाल्बी का सिद्धांत एवं अन्य विचार
- नैतिक विकास और बच्चे : सही–गलत की अवधारणा, ज्यां पियाजे तथा कोह्लबर्ग का सिद्धांत

F-3 प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

पूर्णांक : 100 (70+30) अध्ययन अवधि : 80 घंटा

उद्देश्य :

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल से जुड़ी प्रमुख अवधारणाओं की समझ बनाना।
- प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यचर्या तथा पाठ्यक्रम के माध्यम से बाल विकास के विभिन्न आयामों एवं इसके महत्त्व को समझना।
- बिहार के संदर्भ में, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति और प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका पर समझ बनाना।
- शिक्षकों को कक्षा–कक्ष में प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के पाठ्यक्रम में प्रस्तावित अवधारणाओं के अनुरूप गतिविधियों के आयोजन के कौशलों को विकसित करना।

इकाई– 1 : 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा' की समझ

- प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा : प्रमुख अवधारणाएं
- ईसीसीई की आवश्यकता एवं उद्देश्य
- प्रारंभिक वर्षों के दौरान गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा का बच्चे के विकास एवं जीवन पर प्रभाव
- बच्चे कैसे सीखते हैं : बाल विकास की अवस्थाएं (0–3, 3–6, 6–8 वर्ष), उप–अवस्थाएं एवं सीखना

इकाई– 2 : प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) के पाठ्यचर्या की समझ

- एक संतुलित तथा संदर्भयुक्त ईसीसीई पाठ्यचर्या की समझ
- ईसीसीई पाठ्यचर्या के लघु एवं दीर्घकालिक उद्देश्य तथा नियोजन
- गतिविधियों के आयोजन के लिए विभिन्न विधियों/प्रक्रियाओं का चयन (उदाहरण– विषयवस्तु आधारित प्रक्रिया, प्रोजेक्ट विधि आदि)
- कक्षा में विकासोनुकुल, बाल केन्द्रित तथा समावेशी वातावरण निर्माण

इकाई– 3 : प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा एवं विद्यालय की तैयारी

- प्राथमिक विद्यालयों में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के विस्तार का अर्थ एवं आधार
- प्रारंभिक वर्षों में प्रक्रियाओं के बाल केन्द्रित होने का अर्थ
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में खेल एवं गतिविधियों के आयोजन का महत्त्व
- विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषा तथा गणितीय कौशल

इकाई– 4 : बच्चे की प्रगति का आकलन

- प्रारंभिक वर्षों मे विकास के विभिन्न आयाम एवं अधिगम
- बच्चे की प्रगति के विभिन्न संकेतक एवं मानक
- बच्चे की प्रगति का अवलोकन व आंकलन
- प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा में बच्चे की प्रगति से संबंधित अभिलेखों का संधारण
- बच्चे की प्रगति में घर एवं विद्यालय की भूमिकाओं का अन्तर्संबंध
- विशेष आवश्यकता वाले (दिव्यांग) बच्चे तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

इकाई– 5 : बिहार मे ं प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

- बिहार में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की वर्तमान स्थिति
- राज्य में प्रार िभक बाल्यावस्था शिक्षा को 8 वर्ष तक विस्तार देने का अर्थ
- राज्य में प्रार िभक बाल्यावस्था शिक्षा की चुनौतियां एवं नवाचार
- राज्य में विद्यालय की तैयारी में संस्थाओं (अकादमिक व सामाजिक) से अपक्षा

F-4 विद्यालय संस्कृति, परिवर्तन और शिक्षक विकास

पूर्णांक : 100 (70+30) अध्ययन अवधि : 80 घंटा

उद्देश्य :

- विद्यालय संस्कृति एवं प्रबंधन के विभिन्न आयामों की समझ बनाना।
- विद्यालय में नवाचारी परिवर्तन के विभिन्न संसाधनों एवं तरीकों को समझना।
- कक्षा प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना तथा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के संदर्भ में उनका विश्लेषण करना।
- विद्यालय में विद्यार्थियों के आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था को समझना तथा विश्लेषण करना।
- शिक्षकों के वृत्तिक विकास के विभिन्न आयामों को समझना।
- विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं सरकारी योजनाओं की समीक्षा एवं संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करने की योग्यता विकसित करना।

इकाई–1 : विद्यालय संस्कृति और प्रबंधन

- विद्यालय संस्कृति के संगठनात्मक पहलू : अवधारणा, संरचना एवं घटकों की आलोचनात्मक समझ
- विद्यालय प्रबंधन की व्यवस्था और अंतर्निहित मान्यताएं : विभिन्न घटक, कार्य संस्कृति, अनुशासन, समय प्रबंधन, आपदा प्रबंधन, बाल संसद व मीना मंच की भूमिका
- विद्यालय के प्रबंधन से सम्बंधित दस्तावेजों की समझ : विभिन्न रिकार्ड, संकलन एवं उपयोगिता
- विद्यालय में दिन की शुरूआत : चेतना सत्र की समझ

इकाई–2 : विद्यालय में परिवर्तन

- विद्यालय भवन का सृजनात्मक प्रयोग : सीखने सिखाने के माध्यम के रूप में
- शिक्षा के अधिकार के अंतर्गत विद्यालयी व्यवस्था में परिवर्तन
- समावेशी शिक्षा के अनुरूप विद्यालय संगठन व प्रबंधन
- कला समेकित शिक्षा के माध्यम से विद्यालयी परिवेश एवं कक्षायी शिक्षण में बदलाव
- सूचना व संचार तकनीकी का शिक्षण प्रक्रिया में प्रयोग

इकाई–3 : विद्यालयी शिक्षण की व्यवस्थाएं

- कक्षाकक्ष शिक्षण की प्रकृति : परम्परागत, बालकेन्द्रित, लोकतांत्रिक, सृजनात्मक, आदि
- कक्षाकक्ष संचालन : कक्षा की व्यवस्था, कक्षा में सम्प्रेषण एवं सीखने–सिखाने के विविध स्तर
- सीखने की योजना (लर्निंग प्लान) : अवधारणा, योजना निर्माण, क्रियान्वयन तथा स्वमूल्यांकन
- पाठ्य–सहगामी व सह–शैक्षिक क्रियायें : महत्त्व, योजना एवं क्रियान्वयन (गतिविधियाँ, कला, खेल इत्यादि)
- सीखने–सिखाने के दौरान आनेवाली प्रमुख चुनौतियाँ तथा अनुपूरक शिक्षण की व्यवस्था
- विद्यालय में आकलन एवं मूल्यांकन की व्यवस्था : सतत् एवं व्यापक आकलन, प्रगति पत्रक

इकाई–4 : शिक्षक वृत्तिक विकास (प्रोफेशनल डेवेलपमेन्ट) के आयाम

- शिक्षक वृत्तिक विकास : अवधारणा, आवश्यकता, नीतिगत विमर्श व सीमायें
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम : आवश्यकता, महत्त्व, प्रकार व स्वरूप
- विद्यालय में नेतृत्व व्यवस्था और शिक्षक : प्रशासनिक, सामूहिक, शिक्षणशास्त्रीय, परिवर्तनकारी
- शिक्षक तनाव प्रबंधन : अवधारणा, तनाव के कारण एवं निदान
- शिक्षक के वृत्तिक विकास में स्वाध्याय, लेखन व सहकर्मियों की भूमिका

इकाई–5 : महत्त्वपूर्ण शैक्षिक सस्ं थाएँ, प्रशिक्षण केन्द्र व सरकारी याजे नाओ ं की समीक्षात्मक समझ

● विभिन्न संस्थाओं के कार्यों की समझ तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगिता :

▪ निकटवर्ती जिला स्तरीय संस्थाएं : संकुल संसाधन केन्द्र (CRC), प्रखण्ड संसाधन केन्द्र (BRC), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET), प्रारम्भिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय (PTEC)

▪ राज्य स्तरीय संस्थाएं : राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद (SCERT), बिहार शिक्षा परियोजना परिषद (BEPC), बिहार विद्यालय परीक्षा बोर्ड (BSEB), बिहार संस्कृत शिक्षा बोर्ड (BSSB), बिहार राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड (BSMEB), बिहार मुक्त विद्यालयी शिक्षण एवं परीक्षा बोर्ड (BBOSE)

▪ राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएं : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT), केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (NUEPA), राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE)

▪ अन्तर्राष्ट्रीय एवं गैर सरकारी संस्थाएं : यूनिसेफ (UNICEF), वर्ल्ड बैंक (World Bank) व अन्य गैर सरकारी संस्थाएँ

● शैक्षिक योजनायों से प्रमुख पहलुओं से परिचय तथा विद्यालय के संदर्भ में उपयोगिता :

▪ सर्व शिक्षा अभियान (SSA)

▪ राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (RMSA)

▪ समेकित बाल विकास योजना (ICDS)

▪ बालिकाओं की शिक्षा को प्रोत्साहित करनेवाली विशेष योजनाएं

▪ उपेक्षित वर्ग के बच्चों की शिक्षा का` प्राते साहित करनेवाली विशेष योजनाएं

F-5 भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास

पूर्णांक : 50 (35+15) अध्ययन अवधि : 40 घंटा

उद्देश्य :

- भाषा की प्रकृति के बारे में समझ बनाना।
- प्रत्येक भाषा में निहित बहुभाषिकता को समझना।
- बच्चे भाषा का अर्जन और उपयोग कैसे करते हैं, इस प्रक्रिया को समझना।
- विषय के रूप में भाषा और विभिन्न विषयों के माध्यम के रूप में भाषा की समझ विकसित करना।
- विद्यालय का बच्चों की भाषा पर पड़नेवाले प्रभावों का अध्ययन करना।
- भाषा और समाज के मध्य रिश्तों के बारे में विवेचनात्मक समझ विकसित करना।
- भाषा के सामाजिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक संदर्भों को समझना।

इकाई–1 : भाषा की प्रकृति

- भाषा का अर्थ
- भाषा : – प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में,
– समझ के माध्यम के रूप में,
– संप्रेषण के माध्यम के रूप में
- मानव भाषा और पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों की भाषा में अंतर
- भाषा की नियमबद्ध व्यवस्था : ध्वनि संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, प्रोक्ति (संवाद) संरचना
- भाषा की विशेषताएँ

इकाई–2 : भाषायी विविधता व बहुभाषिकता

- भारत का बहुभाषिक परिदृश्य : भारत में भाषाएँ एवं भाषा–परिवार
- बिहार का बहुभाषिक परिदृश्य
- भाषा और बोली
- बहुभाषिकता के आयाम : बौद्धिक आयाम, शिक्षणशास्त्रीय आयाम
- भाषाओं के संदर्भ में संवैधानिक प्रावधान : अनुच्छेद 343–351, आठवीं अनुसूची
- बहुभाषिक कक्ष और केस स्टडी

इकाई–3 : बच्चों का आरम्भिक भाषा विकास और विद्यालय में भाषा

- बच्चों के भाषा सीखने की क्षमता तथा बच्चों के भाषाई ज्ञान को समझना
–विद्यालय आने से पहले बच्चों की भाषायी पंजी
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ? (स्किनर, चॉमस्की, वायगोत्स्की और पियाजे के विशेष संदर्भ में)
- भाषा अर्जित करने और भाषा सीखने में अंतर
- विद्यालय में भाषा : – विषय के रूप में
– माध्यम भाषा के रूप में
- भाषा सीखने–सिखाने के उद्देश्यों की समझ : कल्पनाशीलता, सृजनशीलता, संवेदनशीलता
- भाषा के आधारभूत कौशलों – सुनना, बोलना, पढ़ना तथा लिखने का विकास
– शुरुआती पढ़ना–लिखना
- लिपि और भाषा

F-6 शिक्षा में जेण्डर और समावेशी परिप्रेक्ष्य

पूर्णांक : 50 (35+15) अध्ययन अवधि : 40 घंटा

उद्देश्य :

- समाज के समावेशी परिप्रेक्ष्य की अवधारणा तथा आवश्यकता को समझना।
- समाज में जेण्डर समानता की अवधारणा तथा औचित्य को समझना।
- विशेष आवश्यकतावाले बच्चों (दिव्यांगजन) की आवश्यकतानुरूप शिक्षा के स्वरूप को समझना।
- विद्यालय के सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को समावेशी परिप्रेक्ष्य एवं जेण्डर समानता के आलाके में विश्लेषित करना।
- विद्यालयी माहौल को समावेशी एवं जेण्डर समानता के अनुरूप निर्मित करने के तरीकों को समझना।

इकाई–1 : समावेशी शिक्षा की समझ

- भारतीय समाज मे ं समावेशन और अपवर्जन के विभिन्न रूप (हाशिए का समाज, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे–दिव्यांगजन)
- कक्षाओं में विविधता और असमानता की समझ : पाठ्यचर्यात्मक और शिक्षणशास्त्रीय संदर्भ
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता
- समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति एवं प्रक्रिया

इकाई–2 : विशेष आवश्यकतावाले बच्चे (दिव्यांगजन) और समावेशी शिक्षा

- समावेशी शिक्षा में विशेष आवश्यकतावाले बच्चों का संदर्भ : ऐतिहासिक विकास, वर्तमान स्थिति, चुनौतियां, बिहार का संदर्भ
- विशेष आवश्यकतावाले बच्चे : विविध प्रकार, पहचान के तरीकें व सीमाएं
- समावेशी कक्षा में विशेष आवश्यकतावाले बच्चो ं के सीखने के लिए शिक्षा का स्वरूप

इकाई–3 : जेण्डर विमर्श और शिक्षा

- जेण्डर : अवधारणा और संदर्भ, पितृसत्ता व नारीवादी विमर्श के संदर्भ में जेण्डर विभेद
- बच्चों के समाजीकरण में जेण्डर की भूमिका : बचपन, परिवार, समुदाय, मीडिया
- शिक्षा व्यवस्था व विद्यालय में प्रचलित जेण्डर विभदे : पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षायी प्रक्रियाओ, विद्यार्थी–शिक्षक (स्टूडेंट –टीचर इन्टेरैक्शन) संवाद के विशेष संदर्भ मे ं
- जेण्डर संवेदनशीलता और समानता में शिक्षा की भूमिका

F-7 गणित का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

पूर्णांक : 50 (35+15) अध्ययन अवधि : 40 घंटा

उद्देश्य

● दैनिक जीवन में गणित की अवधारणाओं का उपयोग कर पाने के कौशल विकसित करना एवं उससे कक्षा में बच्चों के सीखने में मदद लेने के तरीके सोचना।

● बच्चे क्या जानते हैं, इसके बारे में समझना।

● गणित की बुनियादी अवधारणाएं और इनकी सीखे जाने की प्रक्रिया समझना, यथा–संख्या व उससे जुड़ी अवधारणाएं, मापन की समझ एवं आकड़ों का प्रस्तुतिकरण आदि।

● गणित सीखने की प्रक्रिया के मुख्य पहलुओं को समझना व विभिन्न प्रत्ययो ं को सिखाने के लिए संभव तरीके सोच पाना।

इकाई–1 : गणित की समझ

● गणित के बारे में भय, भ्रम और मिथकः गणित सबके लिए

● दैनिक जीवन में गणित : आवश्यकता एवं महत्त्व

● गणित की प्रकृति

● गणितीयकरण

इकाई–2 : प्राथमिक स्तर पर गणित : आधार, उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम

● गणित सीखने–सिखाने के विविध आधार :
– बच्चों की गणितीय समझ एवं अनुभव
– बच्चों की सामाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक परिप्रेक्ष्य की समझ
– गणित एवं संज्ञानात्मक विकास

● प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने के उद्देश्य : राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005, बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008, एन.सी.एफ.टी.ई.–2009, गणित आधार पत्र–2006 (एन.सी.ई.आर.टी.) के विशेष संदर्भ में

● बिहार के प्राथमिक स्तर के गणित का पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तके

इकाई–3 : संख्या एवं संख्या संक्रियाएं

● संख्यापूर्व अवधारणाओं का विकास

● संख्या की अवधारणा की समझ

● गिनती से परिचय

● संख्या प्रत्यय की समझ का विकास एवं विभन्न संकेतों के माध्यम से संख्याओं की प्रस्तुति

● स्थानीय मान

● गणितीय संक्रियाएँ एवं उनमें अन्तर्संबंध

इकाई–4 : मापन एवं आंकड़े

● मापन का अर्थ

● मापन और अनुमान

● अमानक एवं मानक इकाईयाँ

● मापन के दौरान होने वाली गलतियाँ

● लम्बाई, क्षेत्रफल, धारिता, आयतन तथा समय का मापन

● आँकड़ों का प्रत्यय तथा प्रस्तुतीकरण

F-8 हिन्दी का शिक्षणशास्त्र–1 (प्राथमिक स्तर)

पूर्णांक : 50 (35+15) अध्ययन अवधि : 40 घंटा

उद्देश्य

• प्रारम्भिक स्तर पर हिन्दी–शिक्षण के उद्देश्यों के बारे में समझ बनाना।

• प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक भाषायी कौशलों के उन पक्षों को समझना जो प्रारम्भिक स्तर पर आवश्यक हैं।

• प्राथमिक कक्षाओं में सुनने के कौशल की सामर्थ्य में बढ़ोतरी और बोलने की प्रक्रिया में विविध विशिष्टताओं को अर्जित करना।

• बच्चों के भाषायी कौशलों को विकसित करने के सैद्धांतिक पक्षों के बारे में समझ बनाना।

• हिन्दी–भाषा के विभिन्न पहलुओं का आकलन करने के तरीकों से अवगत होना।

• उद्देश्यपरक सीखने की योजना, उपयुक्त कक्षा प्रक्रियाओं के नियोजन तथा संचालन के बारे में समझ विकसित करना।

इकाई–1: प्राथमिक स्तर पर हिन्दी : प्रकृति एवं उसके शिक्षण के उद्देश्य

• बच्चों की दुनिया में हिन्दी

• हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं प्राथमिक स्तर की हिन्दी की समझ

• राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005 और बिहार पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2008 के आलोक में हिन्दी भाषा के उद्देश्यों को समझना

इकाई–2 : प्राथमिक स्तर की हिन्दी : पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की समझ

• बिहार के प्राथमिक स्तर की हिन्दी के पाठ्यचर्या– पाठ्यक्रम के उद्देश्य

• प्राथमिक स्तर की पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम की संरचना

• प्राथमिक स्तर की हिन्दी की पाठ्पुस्तकों एवं अभ्यास प्रश्नों की प्रकृति की समझ

इकाई–3 : भाषायी क्षमताओं का विकास : सुनना व बोलना

• भाषायी क्षमताओं की संकल्पना : विभिन्न भाषायी क्षमताएं और उनके बीच आपसी संबंध

• सुनने व बोलने का अर्थ

• सुनने व बोलने को प्रभावित करने वाले कारक

• प्राथमिक स्तर के बच्चों के सुनने और बोलने की क्षमताओं का विकास :
बच्चों को कक्षा में सुनने व बाले ने के मौके उपलब्ध करवाना, जैसे – आज की बात, बातचीत, अपने बारे में बात करना, स्कूल अनुभवों पर बात करना, आंखों देखी या सुनी हुई घटनाओं के बारे में अभिव्यक्ति करना, बालगीत/कविता सुनना–सुनाना, कहानी सुनना –सुनाना, चित्र–वर्णन, दिए गए शब्दों से कहानी सुनाना, रोल प्ले करवाना, सुने हुए विचारों को संक्षिप्त व विस्तारित कर पाना, परिचित सम–सामयिक विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करना, बच्चों का कहानी, कविता, नाटक आदि रचने, उसे बढ़ाने तथा प्रस्तुत करने के अवसर देना (कविताओं, कहानियों व बालगीतों आदि के उदाहरण प्रारम्भिक कक्षाओं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों से भी लिए जाएँ)

• भाषा सीखने के संकेतक : सुनने और बोलने के संदर्भ में

इकाई–4: पढ़ने की क्षमता का विकास

• पढ़ने का अर्थ : शुरुआती पढ़ना क्या है, शुरुआती 'पढ़ना' की चरणबद्ध प्रक्रिया को समझना

• पढ़ने की प्रक्रिया और विभिन्न सोपानों में अनुमान लगाने, अर्थ समझने, लिपि पहचानने, पढ़कर प्रतिक्रिया देने, पढ़कर सार प्रस्तुत करने का तात्पर्य और महत्त्व

• पढ़ने के प्रकार : सस्वर, मौन पठन, गहन पठन, विस्तृत पठन, शब्द और अर्थ का अनुमान लगाते हुए पढ़ना, 'स्किप रीडिंग, स्कैन रीडिंग' आदि

• पढ़ना सिखाने के विभिन्न तरीके और उनकी समीक्षात्मक समझ : वर्ण विधि, शब्द विधि, वाक्य विधि, अर्थपूर्ण संदर्भ आधारित उपागम

• पढ़ना सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में बाल साहित्य की भूमिका

• भाषा सीखने के संकेतक : पढ़ने के संदर्भ में

F-9 PROFICIENCY IN ENGLISH

Full Marks: 50 (35+15) **Study Time: 40 Hrs.**

Objectives

- To understand the need and importance of English at present time.
- To strengthen the student-teacher's proficiency in English.
- To enrich their vocabulary and brush up their knowledge of grammar of English in context.
- To enable student-teachers to link their proficiency with pedagogy.

Unit–1 : Need and importance of English Language

- English as a global language
- English around us
- Constitutional provision: English as an associate official language
- Proficiency vs. achievement in English

Unit–2 : Developing Oral skills (Listening and Speaking)

- Importance of listening and speaking in acquiring proficiency in English
- Identification and production of distinctive sounds in English : Syllable, Stress, intonation and rhythm
- Recognizing words in various contexts
- Identifying meaning/gist, identifying emotions/feelings in an utterance
- Producing language in acceptable forms : Conveying information, Formulating an appropriate response
- Presentation skill.

Unit–3 : Developing Reading and Writing skills

A. Reading:

- Study Skill
- Reading for local and global comprehension (including inferences and extrapolation)
- Extensive and intensive reading
- Skimming and scanning

B. Writing:

The focus of this section will be developing writing skills in the following:

- Mechanics of writing: strokes, curves, proper shape , size and spacing
- Writing messages, descriptions, reports, notices, applications, letter, invitations, posters, slogans
- Writing a paragraph having coherence, cohesion and unity

Unit-4 : Vocabulary Enrichment and Grammar in Context

A. Vocabulary:

- Words around us (list of active and passive words to be identified, including phrasal verbs and idioms) using them in different contexts
- Content words and function words
- Antonyms, synonyms, homophones, homonyms
- Word formation (using prefixes and suffixes etc)

B. Grammar in Context:

- Need and importance of Grammar : Notion of correctness vs notion of appropriateness
- Traditional grammar vs Grammar in Context
- Grammatical items : Types of sentences, Time and tense, Parts of speech, subject verb agreement, transformation of sentences (including voices, direct and indirect speech etc), linkers, modals, prepositions and prepositional phrase

F-10 पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र

पूर्णांक : 50 (35+15) अध्ययन अवधि : 40 घंटा

उद्देश्य

● पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य व उसकी प्रकृति को समझते हुए बच्चो ं के बौद्धिक, बाध्े ाात्मक व संज्ञानात्मक क्षमता के विकास मे ं उसके महत्व का ेा पहचानना।

● पर्यावरण अध्ययन में निहित अवधारणाओं व उनसे संबंधित तथ्यो ं का विश्लेषण करने का सामर्थ्य विकसित करना।

● अपने परिवेश के अनुभवों के आधार पर बच्चो ं में अवधारणाओं का विकास व परिष्करण के तरीके जानना व विकसित करना।

● कक्षा शिक्षण में संवाद व गतिविधि के माध्यम से पर्यावरणीय प्रक्रियाओं और परिवर्तनो ं की व्याख्या करने की योग्यता प्राप्त करना।

● प्रकृति, व्यक्ति एवं समाज के विभिन्न पहलुओं की संरचना और प्रक्रियाएं एवं उनके बीच के अंतर्सम्बंधो ं को जानने–समझने की जिज्ञासा व ललक उत्पन्न करना।

● व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राष्ट्र एव ं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ एवं विश्व स्तर के मुद्दो ं को व्यापक संदर्भ में समझने की योग्यता विकसित करना।

● पर्यावरणीय परिघटनाओं में प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि अलग–अलग पहलुओ ं को समझते हुए समेकित दृष्टिकोण विकसित करना।

● सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता, सहिष्णुता एवं समता–समरसता का भाव विकसित करना।

● लैंगिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभेदों के प्रति संवेदनशील तथा समालोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।

● बाल मनोविज्ञान व बच्चे कैसे सीखते हैं की समझ को व्यापक, तर्कपूर्ण एवं क्रमबद्ध करने का प्रयास करना।

● खोजी व करके सीखने की प्रवृति उत्पन्न करना तथा अंधविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों के प्रति सचेत करना।

● कक्षा शिक्षण व अन्य गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना।

● दुर्घटनाओं/आपदाओं के समय उचित एव ं तात्कालिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हुए बचाव व निदानात्मक उपायों पर भी समझ बनाना।

● पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में विभिन्न शिक्षण–विधियों के उपयोग एवं उनके विकास करने की क्षमता बढ़ाना।

● स्थानीय संसाधनों का सृजनात्मक उपयोग करते हुए शिक्षण–सामग्रियो ं का निणर्य करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार नवाचार कर उद्देश्यपूर्ण बनाना।

● सतत् एवं व्यापक मल्ू याकं न को पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ मे ं समझते हुए उसके तरीके विकसित करना।

इकाई–1 : पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा

- प्रकृति एवं क्षेत्र
- उद्देश्य एवं महत्त्व
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2008 के संदर्भ में पर्यावरण अध्ययन
- पर्यावरण अध्ययन एकीकृत रूप में (एकीकृत उपागम)
- प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन का संयोजन व विस्तार : पर्यावरणीय प्रकरण (थीम) के प्रमुख आधार परिवार एवं मित्र, जल, भोजन, आवास, यात्रा, वस्तुओं का निर्माण एवं व्यवहार

इकाई–2 : पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में हमारा एवं बच्चों का परिवेश

- बच्चों के परिवेश सम्बन्धी अनुभव, शिक्षण के आधार के रूप में।
- परिवेश की विविधता की समझ।
- अपने परिवेश से अन्य परिवेशों की तुलना
- परिवेश सम्बन्धी सूचनाओं का संग्रह एवं विश्लेषण

इकाई–3 : पर्यावरण अध्ययन का शिक्षणशास्त्र (शिक्षण–अधिगम विधियाँ)

- खोज/अन्वेषण विधि
- प्रोजेक्ट विधि
- परिभ्रमण एवं सर्वेक्षण विधि
- प्रयोग विधि
- गतिविधि आधारित शिक्षण उपागम
- सामूहिक क्रियाकलाप
- प्रदर्शनी/चर्चा एवं संवाद आधारित विमर्श

इकाई–4 : पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में शिक्षक की भूमिका तथा आकलन एवं मूल्यांकन

- पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक की भूमिका
- कक्षा के बाहर और भीतर गतिविधियों का आयोजन एवं संगठन
- कैसे जुटाएं सामग्रियां
- आकलन : – अपने अध्यापन कार्य का विश्लेषण एवं सुधार का आधार

– विद्यार्थियों के कार्यों का बहुआयामी आकलन
– सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया
– सीखने के संकेतकों की समझ
– आकलन सम्बंधी सूचनाओं का इस्तेमाल : रिपोर्टिंग और फीडबैक

F-11 कला समेकित शिक्षा

पूर्णांक : 100 (40+60) अध्ययन अवधि : 80 घंटा

उद्देश्य

- प्रशिक्षुओं को कला समेकित शिक्षा की व्यापक अवधारणा एवं स्वरूपों से अवगत कराना।
- सीखने–सिखाने में कला समेकित शिक्षा की प्रभावी भूमिका का विश्लेषण करना।
- कलात्मक सृजनशीलता को बच्चें के सह–शैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) विकास के तौर पर समझना।
- दृश्य कला से सम्बंधित विभिन्न सामग्रियो ं का निर्माण, शिक्षण में प्रयागे की याजे ना एव ं क्रियान्वयन की समझ विकसित करना।
- प्रदर्शन कला की अवधारणा तथा उसके विविध स्वरूपों से अवगत होना।
- प्रदर्शर्न कला के विविधि स्वरूपों का ` विद्यालय मे ं सीखने–सिखाने की प्रक्रिया से जाडे ना।
- विद्यालय मे ं कला अनुभवों के अवसरो ं को विकसित कर पाने के तरीको ं को समझना।
- कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मल्ू याकं न के विभिन्न उपागमो ं एवं तकनीकों का ` जानना एव ं विद्यालय मे ं उनका प्रभावी प्रयागे करना।

इकाई–1 : कला समेकित शिक्षा की समझ

- कला शिक्षा एवं कला समेकित शिक्षा की समझ
  - कला क्या है
  - कला शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
  - कला समेकित शिक्षा : अवधारणा एवं महत्व
- समकालीन क्षेत्रीय कलाओं, कलाकारों एवं कारीगरों से परिचय
- 'कला शिक्षा' से 'कला समेकित शिक्षा' की ओर : अवधारणात्मक समझ
  - बाल कला की समझ
  - बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता के विकास मे ं कला समेकित शिक्षा की भूमिका
  - प्रारंभिक स्तर की पाठ्यचर्या से कला समेकित शिक्षा का जुडाव

इकाई–2 : दृश्य कला

- दृश्य कलाएँ : अवधारणात्मक समझ एवं शैक्षिक उपयोगिता
- दृश्य कला सम्बंधी कला अनुभव
- दृश्य कलाओं के विविध प्रकार एवं सम्बंधित सामग्री से परिचय एवं विकास : यथा–चित्र बनाना, मुखौटा, मिरर इमेज, कागज एवं कबाड़ से सामग्री निर्माण

इकाई–3 : प्रदर्शन कला

- प्रदर्शन कला : अवधारणात्मक समझ एवं उपयोगिता
- प्रदर्शन कला सम्बंधी कला अनुभव
- प्रदर्शन कला के विविध प्रकार एवं उनकी तैयारी :
  – वाचन, सृजनात्मक लेखन एवं सम्प्रेषण कला
  – संगीत, गायन एवं नृत्य : लोक, शास्त्रीय एवं समकालीन
  – परछाई से रोचक स्वरूपों को गढ़ना
  – नाटक मंचन के विविध स्वरूप
- 'शिक्षा में रंगमंच' की अवधारणात्मक समझ तथा उपयोगिता

इकाई–4 : कला अनुभव का शिक्षण मे सृजनात्मक प्रयोग

- 'सीखने की योजना' और कला समेकित शिक्षा : प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियाँ
- विभिन्न कला सामग्रियों का शिक्षण में प्रयागे : विषयों की विषयवस्तु के संदर्भ मे ं सीखने की याजे ना एवं क्रियान्वयन
- विद्यालय के भवन, जगह, समय और गतिविधि में कला अनुभव के समावेश के तरीकें
- सीखने–सिखाने में कला अनुभव के प्रभावी समावेश हेतु शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका

इकाई–5: कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मूल्यांकन

- कला समेकित शिक्षा में आकलन एवं मलू याकं न : अवधारणात्मक समझ, बच्चो ं के सह–शैक्षिक (को–स्कोलास्टिक) मूल्यांकन में भूमिका, क्रियान्वयन के दौरान याद रखे जानेवाले प्रमुख बिन्दु
- आकलन एवं मूल्यांकन के संकेतक : अर्थ, दृश्य कला एवं प्रदर्शन कला के संदर्भ में
- कला में मलू याकं न के विभिन्न उपागमो ं एवं तकनीको ं की समझ : अवलाके न (आबजर्वेशन) सूची, परियोजना कार्य, पोर्टफोलियो, चेक लिस्ट, रेटिंग स्केल, घटना वृत्तांत (एनॅकडॉटल रेकार्ड), प्रदर्शन (डिस्प्ले व प्रेजेटेंशन) आदि
- आकलन एवं मूल्यांकन को सम्प्रेषित एवं प्रस्तुत करने के विविध तरीकें

F-12 शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.)

पूर्णांक : 100 (40+60) अध्ययन अवधि : 80 घंटा

उद्देश्य

- आई.सी.टी. की अवधारणा तथा शिक्षा में इसकी उपयोगिता से अवगत कराना।
- आई.सी.टी. के विभिन्न उपागमो ं को शिक्षण प्रक्रिया मे ं प्रयागे करने का कौशल विकसित करना।
- आई.सी.टी. के विभिन्न उपकरणों जैसे – टीव्वीव्, रेडियो, कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, रिकार्डर इत्यादि के प्रयोग व रख–रखाव का कौशल विकसित करना।
- शिक्षण अधिगम को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिये इन तकनीको ं के महत्त्व को समझना।
- इन्टरनेट, ब्राउज़र, ई–मेल तथा सर्च इंजन का शिक्षा में कैसे प्रयोग हो, ये जानना व प्रयोग करना।
- विद्यालय के विभिन्न विषयों के षिक्षण मे ं आई.सी.टी. का समावेश कर सीखने–सिखाने की प्रकिया को प्रभावी बनाना।

इकाई–1 : शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी का परिचय

- सूचना तथा संचार तकनीकी की अवधारणा तथा समझ
- सूचना एवं संचार तकनीकी के विभिन्न अवयव
- शिक्षा में सूचना एवं संचार तकनीकी की उपयोगिता एवं महत्व
- समावेशी शिक्षा के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी

इकाई–2 : सूचना एवं संचार तकनीकी के विविध उपकरण

- शिक्षण–अधिगम मे ं ऑडियो विडियो, मल्टीमीडिया साधनों की महत्ता तथा उपयागे
- कम्प्यूटर एवं मोबाइल (हैण्डहेल्ड उपकरण) का संक्षिप्त परिचय
- कम्प्यूटर के विभिन्न प्रकार एवं घटक
- कम्प्यूटर : स्मृति, भंडारण एवं क्लाउड स्टोरेज
- सॉफ्टवेयर के प्रकार
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में कम्प्यूटर एवं मोबाइल की भूमिका

इकाई–3 सूचना एवं संचार तकनीकी के अन्तर्गत ऑफिस ऑटोमेशन का अनुप्रयोग

- वर्ड प्रोसेसर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- स्प्रेडशीट : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- प्रेजेन्टेशन सॉफ्टवेयर : कार्य, सामान्य कौशल तथा शैक्षिक महत्व
- कुछ अन्य उपयोगी सॉफ्टवेयर

इकाई–4 शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया मे ं इंटरनेट

- इंटरनेट : उपयोगिता, शैक्षिक महत्व एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में उपयागे
- विभिन्न प्रकार के ब्राउजर, सर्च इंजन एवं उनकी उपयोगिता
- ई–मेल, सोशल नेटवर्किग एवं इंटरनेट उपयोग में सुरक्षा मूल्यों तथा सिद्धांत
- ई–लर्निग एवं ओपेन लर्निंग सिस्टम
- ओ.ई.आर (ओपेन एजुकेशन रिसोर्सेज) : समझ, स्रोत एवं शिक्षण अधिगम मे उनका उपयोग

इकाई–5 : प्राथमिक स्तर के विषयों के शिक्षण में आई.सी.टी. का उपयागे

- सीखने की योजना एवं विद्यालय के अन्य कार्य के साथ आई.सी.टी. का एकीकरण
- भाषा, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन में आई.सी.टी. संसाधन का प्रयेाग
- मूल्यांकन में आई.सी.टी. का महत्व एवं उपयाग

SEP-1 विद्यालय अनुभव कार्यक्रम–1
School Experience Programme-1

गतिविधियाँ

1. कक्षायी शिक्षण व गतिविधियों का अवलोकन तथा विश्लेषण	अंक–30
2. एक्शन रिसर्च	अंक–30
3. विद्यालय उन्नयन योजना	अंक–20
4. विद्यालय में बच्चों से बातचीत का विश्लेषण	अंक–20
	कुल 100